

रुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपम्	।
विभ्रुम् व्यापकम् ब्रह्म वेदस्वरूपम्	॥
निजम् निर्गुणम् निर्विकल्पम् निरीहम्	।
चिदाकाशमाकाशवासम् भ्रजेअहम्	॥ १ ॥
निराकारमोकारमूलम् तुरीयम्	।
गिरा ग्यान गोतीतमीशम् गिरिशम्	॥
करलम् महाकाल कालम् कृपालम्	।
गुणागार संसारपारम् नतोअहम्	॥ २ ॥
तुषाराद्वि संकाश गौरम् गभीरम्	।
मनोभूत कोटिप्रभा श्री शरीरम्	॥
स्फुरन्मौलिक्लोदिनी चारुगंगा	।
लसदभादभादेन्दु कंठे भुजंगा	॥ ३ ॥
चलत्कुण्डलम् भ्रूसुनेत्रम् विशालम्	।
प्रसन्नाननम् नीलकंठा दयालम्	॥
मृगाधीशचर्मभरम् मुण्डमालम्	।
प्रियम् शंकरम् सर्वनाथम् भ्रजामि	॥ ४ ॥
प्रचण्डम् प्रकृष्टम् प्रगल्भम् परेशम्	।
अभ्रण्डम् अजम् भानुकोटिप्रकाशम्	॥
त्रयः शूल निर्मूलनम् शूलपाणिम्	।
भ्रजेअहम् भवानीपतिम् भावगम्यम्	॥ ५ ॥
कलातीत कल्याणकल्याणतकरी	।
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी	॥
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी	।
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी	॥ ६ ॥
न यावद् उमानाथ पादारविन्दम्	।
भ्रजन्तीह लोके परे वा नराणाम्	॥
न तावत्सुभम् शान्ति सन्तापनाशम्	।
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्	॥ ७ ॥

न जनामि योगम् जपम् नैव पूजाम् ।
नतोअहम् सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम् ॥
जराजन्म दुःखौघ तातप्यमानम् ।
प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो ॥ ८ ॥

रुद्राष्टकमिदम् प्रोक्तम् विप्रेण हस्तुष्टये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषाम् शम्भुः प्रसीदति ॥ ९ ॥

PORTLAND PANDIT